

होम | लाइफस्टाइल |

बिना इंसुलिन डायबिटीज का होगा इलाज, भारत में हुई ये कमाल की खोज

यह दुनिया में पहली बार हुआ है जब एनकेएक्स 6-1 जीन म्युटेशन को एमओडीवाई के नए प्रकार के तौर पर परिभाषित किया गया है.

ख़बर न्यूज़ डेस्क, Updated: 22 फ़रवरी, 2018 10:06 AM



आखिरी बार इस विज्ञापन में नजर आई थीं श्रीदेवी, डेढ़ करोड़ बार देखा गया है वीडियो



स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) ने ग्राहकों को दिया होली का तोहफा : एफडी पर ब्याज दरें बढ़ाई



Holi 2018: होली पर इन दो सहेलियों ने रच दिया इतिहास, 'सहेली की होली' हुआ वायरल

संबंधित

एक और बैकिंग घोटाला: सिंभावली शुगरर्स मिल मामले में सीबीआई के लक्ष्य, ५४.३ टीजे टर्च ज़िफ्टा-लेबल

...तो इस वजह से ऑफिस से ज़्यादा छुट्टियां लेते हैं भारतीय

डायबिटीज है खतरनाक बीमारी, जानिए इसके कारण और बचाव के बारे में

511 SHARES



 ईमेल करें

 टिप्पणियां 2



Image Credit: istockphoto.com/IPGGutenbergUKLtd

मधुमेह के उपचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण खोज

खास बातें

- 1 मधुमेह टाइप-1 में मिलेगी मदद
- 2 मधुमेह टाइप-1 से युवा या बच्चे पीड़ित
- 3 मद्रास डायबिटीज रिसर्च फाउंडेशन में हुई ये रिसर्च

**नई दिल्ली:** डायबिटीज या मधुमेह से पीड़ित लोगों का इलाज इंसुलिन की मदद से किया जाता है. लेकिन इस रिसर्च के मुताबिक अब डायबिटीज टाइप-1 का इलाज बगैर इंसुलिन हो सकता है. मधुमेह के उपचार के क्षेत्र में भारतीय चिकित्सकों ने महत्वपूर्ण खोज की है. चिकित्सकों के मुताबिक इस खोज से मधुमेह के प्रकार का पता कर उसका इलाज आसानी से किया जा सकता है. उनका कहना है कि अक्सर मधुमेह पीड़ितों को इंसुलिन लेना पड़ता है जबकि मधुमेह की टाइप-1 का उपचार बगैर इंसुलिन संभव है.

'बीएमसी मेडिकल जेनेटिक्स' जर्नल में मैच्योरिटी ऑनसेट डायबिटीज ऑफ द यंग (एमओडीवाई) नाम से प्रकाशित इस शोध में अनुसंधानकर्ताओं ने मुधमेह के प्रकार उल्लेख किया है.

बिना मेहनत अब वजन होगा कम, हार्ट अटैक और डायबिटीज में भी मिलेगी राहत

मद्रास डायबिटीज रिसर्च फाउंडेशन (एमडीआरएफ) के डॉ. वी. मोहन और डॉ. राधा वेंकटेशन द्वारा जेनेनटेक, कैलिफोर्निया से डॉ. एंड्रयू एस. पीटरसन, डॉ. सोमशेखर शेशगिरी और डॉ. थॉन्ग टी. एनगुयेन और मेडजेनोम, भारत से डॉ. रामप्रसाद और सैम संतोश के सहयोग से यह शोध प्रकाशित हुआ.

जानिए अमरूद खाने से आपके शरीर में क्या होता है?

चिकित्सकों ने बताया कि सामान्य रूप से मधुमेह के दो प्रकार होते हैं. मधुमेह प्रकार-1 की शिकायत युवाओं या बच्चों को होती है. एमओडीवाई के साथ मरीज आमतौर पर कमजोर होते हैं और उनकी कम उम्र के कारण उन्हें टाइप 1 डायबिटीज से पीड़ित बताया जाता है और उन्हें जीवनभर इंसुलिन इंजेक्शन लेने की सलाह दी जाती है.

साइकिल चलाने के हैं कई फायदे, टेंशन और डिप्रेशन की हो जाएगी छुट्टी

मधुमेह प्रकार-2 डायबिटीज सामान्य तौर पर वयस्कों को प्रभावित करता है और बीमारी के अंतिम स्तरों को छोड़कर हाइपरग्लाइकेमिया को नियंत्रित करने के लिए इंसुलिन की जरूरत नहीं होती है.

डायबिटीज है खतरनाक बीमारी, जानिए इसके कारण और बचाव के बारे में

डॉ. वी. मोहन, निदेशक, एमडीआरएफ ने कहा, "एमओडीवाई जैसे डायबिटीज के मोनोजेनिक प्रारुप का पता चलने का महत्व सही जांच तक है क्योंकि मरीजों को अक्सर गलत ढंग से टाइप 1 डायबिटीज से पीड़ित बता दिया जाता है और उन्हें गैर-जरूरी रूप से पूरी जिंदगी इंसुलिन इंजेक्शन लेने की सलाह दी जाती है. एक बार एमओडीवाई का पता चलने पर एमओडीवाई के ज्यादातर प्रारुपों में इंसुलिन इंजेक्शन को पूरी तरह रोका जा सकता है और इन मरीजों का इलाज बहुत ही सस्ते सल्फोनिलयूरिया टैबलेट से किया जाता है जिनका इस्तेमाल दशकों से डायबिटीज के इलाज के लिए किया जाता है. जहां तक उपचार और इन मरीजों के जीवन और उनके परिवारों की बात है तो यह एक नाटकीय बदलाव है."

डॉ. राधा वेंकटेशन, जेनोमिक्स प्रमुख, एमडीआरएफ ने कहा, "यह दुनिया में पहली बार हुआ है जब एनकेएक्स 6-1 जीन म्युटेशन को एमओडीवाई के नए प्रकार के तौर पर परिभाषित किया गया है. एमओडीवाई का यह प्रकार सिर्फ भारतीयों के लिए अनोखा है या यह अन्य लोगों में भी पाया जाता है, यह जांचने के लिए आगे भी अध्ययन करने होंगे."

INPUT - IANS

देखें वीडियो - डायबिटीज दूर भगाने के लिए व्यायाम